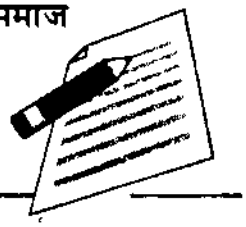

29

भारत की मुख्य सामाजिक समस्याएँ

पुराने समाज के बाद नया समाज और नये समाज के सामने अनुकूलन की समस्या आती है। हमारे देश में भी कुछ मुख्य सामाजिक समस्याएँ हैं।

आपने अशिक्षा की बात सुनी होगी। गांधीजी कहा करते थे कि हमारी संस्कृति पर अशिक्षा एक दाग की तरह है। हमारी आजादी के कोई 57 वर्ष बीत जाने के बाद भी देश में 35 प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं। साक्षरता लोगों को यह समझने का अवसर देती है कि कौन सी चीज सही है और कौन सी गलत।

स्वतन्त्रता के बाद हमारी जनसंख्या तीन गुनी हो गयी है। इस जनसंख्या विस्फोट ने हमारे विकास को रोक दिया है।

वर्तमान में हमारे जन-जीवन के हर क्षेत्र को भ्रष्टाचार ने बुरी तरह से प्रभावित किया है। इसने हमारी तरक्की और सामाजिक जीवन में कई अवरोध पैदा किये हैं।

आपने कई लोगों को झुग्गी-झोपड़ी में रहते हुए देखा है, वे अर्द्ध नग्न हैं और भूख तथा जरूरत की वस्तुओं से पीड़ित हैं। हमारे देश के समाने गरीबी की समस्याएँ बहुत ज्यादा हैं।

इस अध्याय में हम देश की साक्षरता की स्थिति, जनसंख्या विस्फोट, भ्रष्टाचार और गरीबी के बारे में विचार करेंगे।

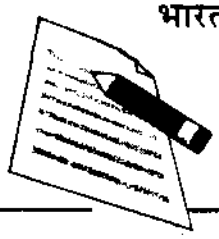

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारत में साक्षरता की स्थिति से परिचित हो सकेंगे;
- जनसंख्या विस्फोट एवं इसकी समस्याओं को जान पायेंगे;
- भ्रष्टाचार रूपी बुराई के कारणों की जानकारी; और
- गरीबी तथा इसके कारणों को जान सकेंगे।

29.1 भारत में साक्षरता की स्थिति

आपने लोगों को बैंक, डाक घर में तथा मतदान के समय अपने दस्तख्त की जगह अंगूठे की छाप लगाते हुए देखा होगा। आपने यह भी देखा होगा कि लोग अपनी चिट्ठी पढ़ने या संदेश लिखवाने के लिए दूसरे से निवेदन करते हुए देखा होगा। क्या आपने कभी सोचा है कि लोग ऐसा क्यों करते हैं? इसका सामान्य कारण यह है कि ये लोग साक्षर नहीं हैं, उन्हें लिखना-पढ़ना नहीं आता, ऐसे लोग एक तरह से विकलांग हैं। आधुनिक समाज में निरक्षरता एक प्रकार का अभिशाप है। यह अज्ञानता की ओर ले जाता है। इससे अंधविश्वास पनपता है एवं व्यक्ति गलत विचारों और कार्यों का शिकार हो जाता है।

दूसरी ओर साक्षरता लिखना-पढ़ना सीखाती है और आदमी को सही व्यवहार की ओर ले जाती है। साक्षरता का अर्थ पढ़ने एवं लिखने की योग्यता एवं भाषा को समझने की है। अशिक्षा यह सब करने की क्षमता नहीं देती।

साक्षरता लोगों को शिक्षा और विकास की ओर ले जाती है तथा अच्छे जीवन के लिए उन्हें कौशल देती है। वे लोग जो पढ़े-लिखे नहीं हैं उनमें अपने अधिकार और कर्तव्यों की जानकारी नहीं होती। उन्हें स्वस्थ व्यवहार नहीं आता और जिन अंधविश्वासों से वे बंधे होते हैं, उनके बारे में उन्हें जानकारी नहीं है। ऐसे लोग नई पीढ़ी के लिए एक मॉडल का काम नहीं कर सकते। ऐसे बहुत से रास्ते हैं, जिन्हें शिक्षा नये रास्तों को विकल्प नहीं देती। शिक्षा प्राप्त करने से लोगों को वैज्ञानिक कुशलता और अपने काम को ढंग से करने की क्षमता प्राप्त होती है। शिक्षा प्राप्त कर नये कार्य को किया जा सकता है, अपने परिवार के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार, हमारे देश के 65 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। अर्थात 35 प्रतिशत नागरिक अभी भी अशिक्षित हैं। 54 प्रतिशत महिला साक्षरता की तुलना

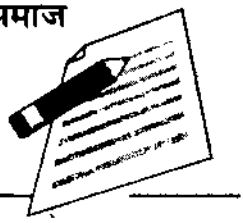

में पुरुषों का प्रतिशत 76 है। आँकड़ों में हम इसे इस प्रकार रखेंगे।

सारणी 1.1: *पुरुष व स्त्री में तुलनात्मक साक्षरता-2001*

वर्ष	व्यक्ति	पुरुष	महिला
1951	16.67	24.90	7.90
2001	65.38	75.85	54.16

1991 की जनगणना के अनुसार, राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में केरल का साक्षरता प्रतिशत सबसे ऊँचा था। यहाँ 90 प्रतिशत लोग साक्षर थे। दूसरी ओर बिहार राज्य में साक्षरता का यह प्रतिशत 38 था। अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशत पुरुषों में 41 और स्त्रियों में 18 था।

विश्व के अशिक्षित लोगों का एक तिहाई भाग भारत में रहता है। कोई 19 करोड़ बच्चे (6-14 आयु वर्ग समूह) के लोग अशिक्षित थे। इनमें चार करोड़ यानी 25 प्रतिशत बच्चों ने स्कूल का द्वार तक नहीं देखा था। लगभग 50 प्रतिशत बच्चे भर्ती होने के बाद स्कूल छोड़ देते थे। इस क्षेत्र में अनुसूचित जातियों व जनजातियों में पिछड़ापन बहुत अधिक था। इन समूहों के मात्र 29 प्रतिशत बच्चे स्कूल में भर्ती थे।

निरक्षरता के कई कारण हैं। इन कारणों में मुख्य रूप से गरीबी, जनसंख्या का विस्तार, चेतना का अभाव और शिक्षा प्रसार के लागू करने में ढील आदि है। हमारे यहाँ शिक्षा नीति को 1960 और दूसरी बार 1986 में लागू किया गया। 1991 में इसकी क्रियान्विति पुन: हुई तथा 1992 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आयी और उसे 14 वर्ष के सभी बच्चों पर लागू कर दिया गया। इस परिवर्तन के अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रम 1979-80 प्रारम्भ किये गये। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, 1944 में अमल में आए। जब देखा गया कि कई बच्चे पढ़ाई छोड़कर स्कूल से बाहर आ गये तब 1995 में दोपहर के भोजन का कार्यक्रम 2001 में चालू किया गया। इसके लिए संविधान में 93 संशोधन किया गया। केन्द्रीय सरकार ने अभिभावक, सामाजिक कार्यकर्ता और शासन के सहयोग से सर्व शिक्षा अभियान प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय खुले स्कूल की अवधारणा के तहत पढ़ाई प्रारम्भ की गयी और देश के वे हिस्से जो आन्तरिक क्षेत्रों में थे, उन्हें बहुत बड़ी सहायता दी गयी।

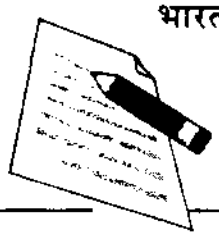

पाठगत प्रश्न 29.1

निम्न में से सही उत्तर को चुनिए:

(i) 2001 की जगनणना के अनुसार, हमारे देश में साक्षरता का निम्न दर रहा है:

(क) 62%

(ख) 64%

(ग) 66%

(घ) 65%

(ii) 2001 की जनगणना के अनुसार, देश में महिला साक्षरता का प्रतिशत है:

(क) 50%

(ख) 52%

(ग) 56%

(घ) 54%

(iii) हमारे देश की जनसंख्या में सबसे अधिक साक्षरता का दर किस राज्य में है:

(क) तमिलनाडु

(ख) कर्नाटक

(ग) आन्ध्र प्रदेश

(घ) केरल

(iv) हमारे देश के किस राज्य में कम से कम साक्षरता का प्रतिशत है:

(क) उत्तर प्रदेश

(ख) मध्य प्रदेश

(ग) राजस्थान

(घ) बिहार

(v) 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की हमारे देश में कितनी संख्या है:

(क) तीन करोड़

(ख) चार करोड़

(ग) पाँच करोड़

(घ) छः करोड़

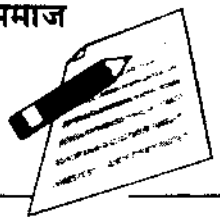

Notes

29.2 जनसंख्या विस्पफोट

जनसंख्या का विस्फोट यानी जनसंख्या में तेजी से विस्तार। इससे अर्थ यह निकलता है कि जनसंख्या की वृद्धि चौंकाने वाली गति से हो रही है। यह खतरे की एक घंटी है। इसमें जनसंख्या का मृत्यु दर और जन्म दर में बड़ा अन्तर होता है लेकिन जनसंख्या के विशेषज्ञ इस बात को स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि आज जो जनसंख्या का विस्तार है, वह एक संक्रमण काल का विस्तार है। यह विस्फोट मृत्यु दर में एकाएक कमी है और जन्म दर में उसी अनुपात में वृद्धि है। भारत में आर्थिक विकास का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि हम जनसंख्या वृद्धि पर कितना नियंत्रण रखते हैं।

जनसंख्या के विशेषज्ञों के अनुसार, प्रत्येक देश में जनसंख्या का संक्रमण तीन अवस्थाओं में होता है। पहली अवस्था वह होती है, जब जन्मदर और मृत्युदर दोनों ही उच्च होते हैं। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या लगभग स्थायी रहती है। इस भाँति गाँवों में जहाँ परम्परागत मानदण्ड है, यानी शिक्षा की कमी है वहाँ उच्च जन्मदर पायी जाती है। चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण मृत्युदर बढ़ जाता है।

जनसंख्या संक्रमण की दूसरी अवस्था तब आती है जब किसी भी देश में औद्योगीकरण, शिक्षा विस्तार और चिकित्सा सहायता बढ़ जाती है। इसके परिणामस्वरुप मुत्यु दर में कमी आ जाती है। चूंकि समाज प्राथमिक रूप से खेतीहर रहता है और शिक्षा की पहुँच केवल समाज के कुछ भागों तक ही पहुँचती है, परिवार का आकार बढ़ता नहीं है। इस समाज में जन्मदर ज्यों का त्यों रहता है। परिणामस्वरूप जनसंख्या का विस्फोट होने लगता है। हमारा देश आज इस प्रकार के संक्रमण काल में हैं।

तीसरी अवस्था में जन्मदर नीचे गिर जाता है और यह शिक्षा और परिवार नियंत्रण की विधियों द्वारा होता है। इस तरह का संक्रमण जनसंख्या के विस्फोट को रोकता है।

जनसंख्या का विस्फोट आज हमारे देश में एक बहुत बड़ा मुद्दा है। हमारे यहाँ अनुमानत: 35 बच्चे हर एक मिनट में पैदा होते हैं और इस तरह हमारी जनसंख्या में 45,000 व्यक्ति जनसंख्या में जुड़ते हैं। इस प्रकार हमारी जनसंख्या में प्रतिवर्ष 16 मीलियन लोगों की वृद्धि होती है, जिन्हें हमें भोजन देना होता है। उनके लिए शिक्षा, आवास तथा नये धन्धे उपलब्ध करवाने पड़ते हैं। इस भाँति यहाँ जनसंख्या वृद्धि का दर 2.0 प्रतिशत प्रतिवर्ष है।

चीन के बाद भारत की जनसंख्या सबसे ज्यादा है। सन् 2001 में जनसंख्या की

प्राथमिक रपट के बाद हमारे देश की जनसंख्या 102.72 करोड़ है। इस तरह विश्व की सम्पूर्ण जनसंख्या का 16.8 प्रतिशत भारत में निवास करता है लेकिन विश्व की कुल भूमि का 2.4 प्रतिशत भारत में हैं। भारत की जनसंख्या 20वीं शताब्दी में सबसे अधिक बढ़ी है।

29.2.1 जनसंख्या विस्फोट से उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ

जब जनसंख्या का विस्फोट होता है, तब इसके परिणामस्वरूप कई सामाज-आर्थिक समस्याएँ देश के समाने उभर कर आती हैं। इन समस्याओं में सम्मिलित है, आवास की कमी, भूमि की कमी, गरीबी, निरक्षरता, निम्न जीवन शैली, बेरोजगारी, कुपोषण, खराब स्वास्थ्य, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, स्थानान्तरण और अपराध।

अधिक जनसंख्या की कुछ समस्याएँ

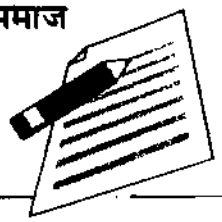

Notes

बड़े परिवारों ने आवास की समस्याएँ पैदा कर दी हैं। परिवार में बराबर विभाजन होने से खेती के लिए भूमि कम हो गयी है। भूमि के कम होने से गरीबी बढ़ गयी है। परिणामस्वरूप लोग स्कूलों में बच्चों को भेजने के बजाय काम के लिए भेजने लगे हैं। परिणामत: परिवार के सदस्यों में पोषण व कुपोषण दोनों ही आ जाते हैं। कुल मिलाकर जनसंख्या विस्फोट से लोगों का जीवन यापन कष्टदायक हो जाता है। यह स्थिति खान-पान के प्रतिमान को बिगाड़ देती है। जनसंख्या के तीव्रता से बढ़ने के कारण बेरोजगारी बढ़ जाती है और लोगों की पगार या दिहाड़ी घट जाती है, इससे अपराध भी बढ़ जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 29.2

निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत का चिन्ह लगाइए:

(1) जनसंख्या विस्फोट का आशय है जनसंख्या में खतरनाक ढंग से बढ़ने की दर। (सही/गलत)

(2) जनसंख्या विस्फोट में जन्म दर व मृत्यु दर बढ जाती है। (सही/गलत)

(3) जनसंख्या विस्फोट एक संक्रमण घटना है। (सही/गलत)

(4) हमारे देश की जनसंख्या वृद्धि वार्षिक 2.0 प्रतिशत है। (सही/गलत)

(5) विश्व में भारत दूसरे नम्बर का बहुत बड़ी जनसंख्या वाला देश है। (सही/गलत)

29.3 भ्रष्टाचार

अब हम देखें कि भ्रष्टाचार क्या है? सामान्य शब्दों में भ्रष्टाचार का आशय किसी व्यक्ति का चरित्र होना, नैतिक दृष्टि से गिरना और गैर कानूनी कार्यों का करना है। दूसरे शब्दों में येन-केन प्रकारेण धन कमाना है। धन कमाने के लिए न तो अपने कर्तव्यों को करना है और न ही लोगों, समाज तथा देश के लिए अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करना है।

> भ्रष्टाचार वह क्रियाकलाप है, जिसमें एक व्यक्ति बेईमानी और गैर-कानूनी ढंग से धन लेता है या अपने काम को करवाता है। इस तरह का पैसा बेईमानी का पैसा होता है।

हमारे देश में भ्रष्टाचार सर्वव्यापी है और सभी ओर देखने को मिलता है। भारत विश्व

Notes

में बहुत बड़ा प्रजातन्त्र है। जनसंख्या की दृष्टि से इसका स्थान दूसरा है। अतीत काल से भारत ईमानदारी, नैतिकता एवं ऊँचे मूल्यों के लिए प्रतिष्ठित है। सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के साथ-साथ भ्रष्टाचार ने देश के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

हम सब यह जानते हैं कि बहुत बड़ी संख्या में जनसेवक, राजनीतिज्ञ, कर्मचारी उद्योगपति, व्यापारियों को भ्रष्टाचार के जुर्म में जेल भेजा गया है। भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराई पर दण्डात्मक सजा देने पर भी यह बीमारी दूर नहीं हुई। लोग ईमानदारी के सिद्धान्तों पर कोई समझौता नहीं करते। लोग सामाजिक मूल्यों को सरलता से छोड़ देते हैं, तो उनका व्यवहार भी स्वार्थी हो जाता है। अर्थात आज भ्रष्टाचार आम जन-जीवन समाहित हो चुका है।

भ्रष्टाचार का अभिव्यक्ति

देश में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है। भाई-भतीजावाद दहेज, बेईमानी, अनैतिकता, भ्रूण हत्या आदि सामाजिक भ्रष्टाचार के दृष्टान्त हैं।

दफ्तरों में अपने काम को करवाने के लिए अवैध पैसा देना एक सामान्य भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के कई दृष्टान्त हैं: दफ्तर में काम के लिए दूसरे से धन लेना, चुनाव लड़ना, चुनाव जीतने के लिए बाहुबलियों से सहायता लेना, मतदान केन्द्रों को लूटना, अपराधियों को चुनाव के लिए टिकिट देना, सरकार बनाने या तोड़ने के लिए विधायकों को धन देना, भ्रष्टाचार है। इस तरह का भ्रष्टाचार राजनीतिक भ्रष्टाचार है।

कुछ अधिकारीतन्त्र के भ्रष्टाचार हैं, सरकार को सप्लाई करके धन लेना, स्थानान्तरण हेतु धन लेना ये सब अधिकारीतन्त्र और प्रशासन के भ्रष्टाचार के स्वरूप हैं। कहीं पर प्रवेश लेने के लिए धन देना, मुफ्त डिग्री लेना, परीक्षा के प्रश्न-पत्रों को लीक करना, इस तरह के कई अपराध हैं, जो भ्रष्टाचार में आते हैं। विकास के कार्यों में भी भ्रष्टाचार देखने को मिलता है। देखा जाय तो भ्रष्टाचार के दृष्टान्त एक नहीं अनेक हैं, राष्ट्र के एक क्षेत्र में नहीं अनेक क्षेत्रों में हैं, जैसे कालाबाजारी, तस्करी, मुनाफाखोरी, खाद्य पदार्थों में मिलावट आदि। हरिकथा अनन्ता। कुल मिलाकर प्रशासन, विकास, वाणिज्य सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का कोई न कोई स्वरूप हमें अवश्य मिलेगा।

29.3.1 भ्रष्टाचार के कारण

समाज में भ्रष्टाचार के पीछे कई कारण हैं। मूल कारण धन है। व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए धन चाहता है। इसलिए वह भ्रष्टाचार को अपने जीवन में लाता है। उसे पैसा कई कामों के लिए चाहिए। वह अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी करना चाहता है। उसे

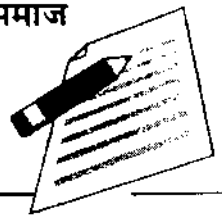

दहेज की बड़ी रकम देना है, उसे अपने बच्चों को उच्चतम शिक्षण संस्थाओं में रखना है, उसे अपना घर पाँच सितारा की तरह बनाना, उसे चुनाव लड़ना है और उसे ऐसे वस्त्रों को पहनाना है, जो उसे समाज में उच्च स्थान प्रदान करें।

पाठगत प्रश्न 29.3

कोष्टक में दिये गये उपयुक्त शब्दों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(1) भ्रष्टाचार का मतलब है---------- साधनों से धन एकत्र करना। (वैध/अवैध)

(2) भ्रष्टाचार----------क्षेत्रों में पाया जाता है। (कुछ/प्रत्येक)

(3) हमारे देश में भ्रष्टाचार को उच्च स्थान प्राप्त----------है। (है/नहीं)

(4) हमारे देश में शिक्षण संस्थाएँ भ्रष्टाचार से ---------- है। (मुक्त/ मुक्त नहीं)

29.4 गरीबी

गरीबी एक सार्वभौमिक समस्या है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की आय कम होती है, जिस कारण वह अपने परिवार के सदस्यों का भरण-पोषण करने, तथा आवास की व्यवस्था करने में कठिनाई महसूस करता है। जिन लोगों की आय पार्याप्त नहीं होती है, वे गरीब कहलाते हैं।

गरीबी एक ऐसी आयोग्यता है, जिसमें एक व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के लिए दो वक्त के भोजन की व्यवस्था भी नहीं कर पाता है। हमारे देश की जनसंख्या का बहुत बड़े भाग की आय अपर्याप्त है। इसलिए उन्हें गरीबी रेखा से नीचे की श्रेणी के रूप में जाना जाता है।

जैसा आप जानते हैं कि नगरीय गरीबी ग्रामीण लोगों द्वारा शहरी क्षेत्र में कार्य तथा दिहाड़ी के लिए आने का परिणाम है। ये लोग गंदी बस्तियों में अस्वास्थ्यपरक स्थितियों में रहते हैं। नगरीय गरीबी का एक कारण लोगों में बहुत अधिक बेरोजगारी है।

मानवीय कारकों के आधार पर गरीबी को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही नहीं देखा जा सकता, इसे वंचितता के नजरिए से भी देखा जाना चाहिए। इस भाँति मनुष्यों की

Notes

गरीबी को मानव जीवन के तीन तत्वों के आधार पर देखा जाना चाहिए–लम्बा जीवन, गरीबी और जीवन का उच्च स्तर। अत: गरीबी वह है, जिसमें जीवन असहनीय हो जाता है।

29.4.1 गरीबी के कारण

गरीबी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

(1) **सामाजिक वर्ग:** हमारे भारत में अनुसूचित जातियाँ निम्नतम स्थिति में हैं। उनके पास कोई सम्पत्ति नहीं थी। इस कारण वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीब रहे। इन लोगों ने सामाजिक रीति-रिवाजों, परम्पराओं पर बहुत खर्च किया है। लोग दहेज देने के लिए अपनी जमीन आदि को बेच देते हैं।

(2) **आर्थिक कारण:** कृषि भूमि का गैर-बराबर वितरण, बेरोजगारी, निम्न पगार, ऋणग्रस्तता, गरीबी के कारण हैं। हमारे समाज में कई ऐसे परिवार हैं, जिनके पास भूमि नहीं है या वे लगभग भूमिहीन हैं। वे काम या पगार के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। वे वर्ष भर खाली हाथ रहते हैं। उनमें गरीबी ऐसी है कि वे कभी भी छोटी पगार के लिए खींचातानी नहीं कर सकते ऊँचे ब्याज पर उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। यदि वे ऋण चुकाने की स्थिति में नहीं होते तो उन्हें बंधुआ मजदूर की तरह काम करना पड़ता है और ऐसी स्थिति में उनकी दिहाड़ी नाममात्र की होती है।

(3) **राजनीति कारण:** सरकार ने गरीबी दूर करने के लिए अनुसूचित नीतियों को अपनाया है। अब हमने विदेशों के लिए अपना बाजार खोल दिया है। अब हमें उत्पादन को विदेशी उत्पादन के साथ में जोड़ना पड़ता है। कृषकों और जंगल निवासियों के लिए हमारे यहाँ पर्याप्त बाजार नहीं है और न कृषि उत्पादन के लिए पढ़े-लिखे लोगों के लिए हमारे यहाँ धन्धों की कमी है। यहाँ स्थिति यह है कि नौजवानों को शहरों में काम करने के लिए स्थानान्तरण करना पड़ता है। यह स्थानान्तरण वर्ष प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप कस्बों और शहरों में गंदी बस्तियाँ बढ़ रही हैं। इन बस्तियों में लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है जिसका परिणाम गरीबी है।

(4) **धार्मिक कारण:** हमारे देश में धार्मिक विश्वास और व्यवहार गरीबी में वृद्धि करते हैं। कर्मकाण्ड और धार्मिक रीति-रिवाजों को करने में लोग अनाप-शनाप खर्च करते हैं। इन कामों के लिए वे साहूकारों से कर्ज भी लेते हैं। जब वे कर्ज नहीं चुका पाते तब उन्हें अपनी जमीन को गिरवी रखना पड़ता है। कभी-कभी जेवर जैसी अन्य सम्पत्ति भी बेचनी पड़ती है। वे लोग जिनके पास गिरवी रखने के लिए कोई वस्तु नहीं होती तब वे बंधुआ मजदूर बन जाते हैं। यह सब उनको

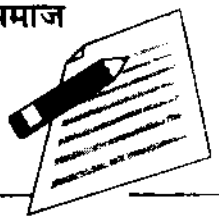

Notes

करना पड़ता है चूंकि किसी भी तरह उन्हें सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाज निभाने पड़ते हैं।

(5) **प्राकृतिक कारण:** हमारे देश में गरीबी के कुछ प्राकृतिक कारण भी हैं। तूफान, सूखा, भूकम्प आदि ऐसी अपदाएं हैं, जो लोगों को गरीब बनाए रखती हैं। कतिपय प्राकृतिक कारणों से भी लोगों की आय बहुत थोड़ी हो जाती है। ये प्राकृतिक कारण ऐसे होते हैं, जो लोगों को ऐसा बेतहाशा कर देते हैं कि वे न तो भोजन का जुगाड़ कर पाते हैं और न कपड़े पहन सकते हैं।

(6) **भौतिक कारण:** देश में गरीबी का कारण भौतिक भी है। कई लोग शारीरिक यातनाओं से दुर्बल हो जाते हैं। ऐसे लोगों को बीमारी, विकलांगता, दुर्घटना, आत्महत्या, मानसिक रोग, शराबखोरी अदि से ग्रसित होते हैं।

(7) **निरक्षरता:** हमारे यहाँ निरक्षरता भी गरीबी के लिए उत्तरदायी है। निरक्षरता के कारण लोग गरीबी के चक्र में आ जाते हैं। इसके कारण ही लोग पूजापाठ, कर्मकाण्ड, डॉक्टर आदि के चक्कर में आकर गरीब हो जाते हैं।

(8) **जनसंख्या विस्फोट:** जनसंख्या विस्फोट पितृवंशीय सम्पत्ति के बंटवारे के कारण भी हैं। इस सम्पत्ति का जब बंटवारा होता है तब इससे भूमिहीनता, बेरोजगारी और गरीबी आ जाती है।

पाठगत प्रश्न 29.4

कॉलम 'क' को 'ख' से मिलान कीजिए

क	ख
(1) आय की दृष्टि से गरीबी हैं	(अ) गरीबी के राजनीतिक कारण भी हैं
(2) मानवीय दृष्टि से गरीबी हैं	(आ) 43.5 प्रतिशत
(3) हमारे देश में गरीबी की सीमा है	(इ) रोटी खाने के लिये पर्याप्त आय होनी चाहिये।
(4) हमारे देश में वयस्क अशिक्षा प्रतिशत है	(ई) लम्बा जीवन नहीं होना और ज्ञान का तथा जीवन यापन का अच्छा स्तर
(5) सामाजिक, आर्थिक, धार्मिकए प्राकृतिक तथा भौतिक कारण हैं	(उ) 43.0

आपने क्या सीखा

- भारत में शिक्षा की दशा बताती है कि 34.63 प्रतिशत लोग आज भी अशिक्षित हैं। 6-14 वर्ष के आयु समूह के चार करोड़ बच्चों ने स्कूल नहीं देखा है। पुरुषों में साक्षरता का दर 75.85 है। स्त्रियों में यह दर 54.16 प्रतिशत है। केरल देश का सबसे अधिक साक्षर राज्य है, जबकि बिहार और राजस्थान साक्षरता की दृष्टि से निम्न स्थान पर हैं।
- जनसंख्या विस्फोट हमारे यहाँ भीषण रूप से बढ़ गया है। यह विस्फोट तब समझा जाता है जब मृत्यु दर कम हो जाती है तो इस अनुपात में जन्म दर में कमी नहीं आती। ऐसी स्थिति में लोग भूमिहीन, गरीब, असाक्षर, बेरोजगार, कुपोषित, और निम्न स्तर के हो जाते हैं।
- भ्रष्टाचार के द्वारा लोग धन एकत्र करते हैं और यह सब गैर-कानूनी एवं अनैतिक तरीकों से होता है। भ्रष्टाचार एक व्यक्तिगत व्यवहार है, जिसके कारण व्यक्ति धन और वस्तुओं का लाभ उठाता है। हमारे देश में भ्रष्टाचार सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्रों में देखने को मिल रहा है। शीघ्रातिशीघ्र धनवान बन जाना, धंधे से अधिकाधिक प्राप्त करने की आशा, दहेज, मंहगी तकनीकी पढ़ाई ये सब कारण हैं, जिनसे भ्रष्टाचार बढता है।
- आर्थिक दृष्टि से गरीबी व्यक्ति की वह अयोग्यता है, जिसके कारण वह दो समय की रोटी नहीं खा सकता। मानवीय दृष्टि से गरीबी लम्बे जीवन को नहीं देती। अच्छा जीवन स्तर नहीं देती। गरीबी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, भौतिक तथा शिक्षा सम्बन्धी कारण हैं।

शब्दावली

जन्म दर : किसी समुदाय के 1000 जनसंख्या की पीछे जन्मों की संख्या।

भ्रष्टाचार : धन प्राप्त करने के लिए नैतिकता और चरित्र को छोड़ देना।

मृत्यु दर : किसी समुदाय के 1000 जनसंख्या की पीछे मृत्यु की संख्या।

जनांकिकीय : जनसंख्या में आयु, शिक्षा आदि से जुड़े आंकड़े।

संक्रमण : परिवर्तन।

परिवार का आकार : समुदाय में परिवार के सदस्यों की औसत संख्या।

मानवीय गरीबी : अल्प जीवन काल, कम ज्ञान तथा निम्न जीवन स्तर।

निरक्षता : लिखने व पढ़ने की अक्षमता।

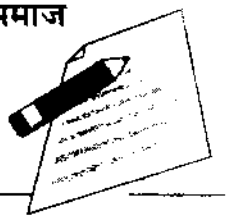

साक्षरता : लिखने व पढ़ने की क्षमता।

साक्षरता दर : समुदाय में प्रत्येक 100 पर पढ़े-लिखों की संख्या।

जनसंख्या विस्फोट : जनसंख्या में तीव्र वृद्धि।

निर्धनता : निम्न आय तथा दो जून रोटी की व्यवस्था न कर पाना।

ग्रामीण निर्धनता : भूमि का असमान वितरण तथा मजदूरी के कारण गाँवों में गरीबी से पायी जाती है।

नगरीय निर्धनता : नगरीय क्षेत्रों में गरीबी मुख्य रूप से ग्रामीण युवकों का कार्य के लिए शहरों में स्थानान्तरण तथा मजदूरी एवं शहरी युवकों को बेरोजगारी।

पाठान्त प्रश्न

(1) साक्षरता किसे कहते हैं? किस राज्य में साक्षरता दर सबसे अधिक हैं?

---

(2) जनसंख्या विस्फोट से क्या आशय है?

---

(3) जनसंख्या विस्फोट से सम्बन्धित पाँच सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के नाम दीजिए।

---

(4) भ्रष्टाचार से क्या अभिप्राय है? इसके पाँच प्रकारों के नाम दीजिए।

---

(5) निर्धनता किसे कहते हैं? यह मानवीय गरीबी से किस प्रकार भिन्न है?

29.8 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1 (i) घ

(ii) घ

Notes

(iii) घ

(iv) ग

(v) ख

29.2 (i) सही

(ii) गलत

(iii) सही

(iv) सही

(v) सही

29.3

(i) अवैध

(ii) प्रत्येक

(iii) है

(iv) मुफ्त नहीं

29.4

(i) a-c, b-d, c-e, b-d, e-a